माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में सन्निहित शैक्षिक वातावरण के सन्दर्भ में विद्यार्थियों के जीवन मूल्य, अधिगम आदतों तथा शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

शोध प्रबंध की रूपरेखा

शिक्षा शास्त्र में पीएच.डी. उपाधि हेतु

शोध संक्षिप्तिका सत्र– 2022

शोध निदेशिकाः

डॉ० नीतू मान

सहायक प्राध्यापिका

शिक्षा शास्त्र

एडमिशनआई.डी. 21211131

शोधकर्त्री

शालिनी शर्मा

पी.एच.डी. (छात्रा)

शोध केन्द्र

(शिक्षा विभाग)

आई.आई.एम.टी. विश्वविद्यालय मेरठ

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या
1	प्रस्तावना	2
2	सम्बन्धित शोध साहित्यों का सर्वेक्षण	2–5
3	आवश्यकता एवं महत्व	5–6
4	शोध शीर्षक	6
5	शोध उद्देश्य	6
6	शोध परिकल्पना	7
7	तकनीकी पदों की व्याख्या	8
8	शोध परिसीमाएँ	8
9	शोध विधि	8
10	जनसंख्या एवं न्यादश्र्ञ	8
11	शोध उपकरण	9
12	शोध चर	9
13	प्रयुक्त सांख्यिकी विधि	9
14	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	10

प्रस्तावना :–

शिक्षा शब्द संस्कृत के 'शिक्ष' धातु से बना है, जिसका अर्थ सीखना अथवा सीखाना होता है शिक्षा का तात्पर्य जीवन में चलने वाली ऐसी प्रक्रिया से है जो मनुष्य को अनुभव द्वारा प्राप्त होता है। ये प्रक्रिया सीखाने के रूप में बचपन से चलती है एव जीवनपर्यन्त चलती रहती है।

हमारे प्राचीन ग्रंथों में ज्ञान को मानव का तृतीय नेत्र कहा गया है जो अज्ञानता को दूर कर सत्य का दर्शन करता है विद्या ददाति विनयमः विद्या हमें जीवन से मुक्त कराती है। सा विद्या साविमुक्त्येः ।

संकुचित अर्थ में शिक्षा बालक का योजनाबद्ध कार्यक्रम के अन्तर्गत प्रदान किये जाने वाली एक ऐसी योजना है जिसमे निर्धारित उद्देश्यों के प्राप्ति के प्रयत्न किये जाते है।

किसी भी विद्यालय कि सभी सफलता में भौतिक संस्थानों की प्रबंध से भी ज्यादा स्कूल के शैक्षिक वातावरण की होती है स्कूल के शिक्षा का वातावरण स्थानिय क्षेत्र की स्थितियो परम्पराओ पूर्व अनुभव सामाजिक आर्थिक इत्यादि अनेक कारको पर निर्भर करती है।[1]

शिक्षा की परिभाषा :–

भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दी गयी शिक्षा की परिभाषाए निम्न हैं :–

बौद्ध धर्म के अनुसार "शिक्षा वह है जो निर्वाण दिलाए"[2]

एस०इस० मैकेन्जी व्यापक अर्थ मे, "शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जीवन के पर्यन्त चलती है तथा जीवन के प्रत्येक अनुभव से उसमे वृद्धि होती है।"[2]

सुकरात :– "शिक्षा का अर्थ है–प्रत्येक मनुष्य मे अद्रश्य रूप मे विधमान संसार के सर्वमान्य विचारो को प्रकाश में लाना।"[2]

विवेकानन्द–: ''शिक्षा मनुष्य के अन्दर सन्निहित पूर्णता का प्रदर्शन है।''[2]

शिक्षा मानव जीवन की आधारशील है। एवं वातारण शिक्षा की महत्वपूर्ण सामग्री है। प्रत्येक बालक का पालन–पोषण एवं उनका वृद्धि एक निश्चित परिवेष में होता है इस परिवेष का बालक के वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान होता है। उचित वातारण न मिलने से उनकी प्रतिभाएँ वृद्धि नहीं हो पाती है।

शिक्षा पर स्कूल के परिवेश का महत्वपूर्ण प्रभाव बनता है अतः स्कूल के परिवेश के प्रभाव से बालक अपने जीवन प्रगतिशीत बनता है, अतः स्कूल परिवेश में शैक्षिक एवं सामाजिक जीवन का नीव कहा जाता है बच्चो की योग्यता का प्रतिष्ठित करने की पात्रता के वृद्धि में उनके दैहिक एवं अन्तरर्द्धद के साथ–साथ स्कूल परिवेश की आपूर्ति भी महत्वपूर्ण होता है। स्कूल परिवेश के अन्तर्गत स्कूल का परिवेश गुरू, साम्रगी, प्रकाष्ठ सफाई आदि बातो का समावेश होता है। प्रत्येक माता–पिता विद्यालयों से ही इच्छा रखते हैं कि विद्यालयों का वातावरण, हमारे बच्चों के अनुकूल हो जिसमें हमारे बच्चों का भविष्य सुरक्षित हो सकें क्योकि यदि स्कूल का वातावरण अच्छा होगा तो ही बच्चों का भविष्य अच्छा होगा। स्कूल का वातावरण ही बच्चे के सुनहरे भविष्य की नींव रखता है।[3]

शिक्षा के तीन अंग होते है –

1– पाठ्यक्रम 2–शिक्षक 3–विद्यार्थी

वातावरण इन तीनो अंगो को प्रभावित करता है।

अधिगम आदतों का मानव जीवन में विशेष स्थान है। वास्तव में मूल रूप में आदत एक मानसिक रूप है। बालक के सीखे हुए व्यवहार में या अर्जित किए हुए व्यवहार में आदतों का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। जब बालक किसी कार्य को जान बूझ कर अपनी इच्छा से बार–बार दोहराता है। तब वह क्रिया कुछ समय बाद बिना प्रयास के स्वतः संचालित होने लगते है बार –बार दोहराये गए इस ऐच्छिक कार्यों के परिणाम

को आदत कहते हैं। दैनिक जीवन में ज्यादातर अध्ययन सम्बन्धी कार्य आदतों के फलस्वरूप ही होते हैं। जैसे–खाने का समय, सोने का समय, खेलने का समय, आदि आदतों के द्वारा ही होती है। जिसमें अच्छी आदतें व्यक्ति को अधिक प्रभावशाली बनाती है। आदत के कारण ही बालक में प्रेम दया, परोपकार सहनशीलता जैसे अच्छे गुणों का विकास होता है।[4]

विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी आदतों पर शिक्षा प्रणाली तथा शिक्षा संस्थानों का भी प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।

शैक्षिक उपलब्धिः–

अपने जीवनकाल से ही बालक अनेक प्रकार के कौशल और ज्ञान को कितनी दक्षता को उसके आत्मसात् किया जिसका पता उसके ज्ञान कौशल के अनुभव के जाँच से चलता है।

प्रेसी राबिन्स व हाब्स के अनुसार, ''उपलब्धि परीक्षाओं का निर्माण मुख्य रूप से छात्रों के सीखने के स्वरूप और सीमा का माप करने के लिए किया जाता है।''

विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी आदतों पर शिक्षा प्रणाली तथा शिक्षा संस्थानों का भी प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।

शिक्षा पर वातावरण का प्रभाव

बालक की शिक्षा बुद्धि, मानसिक प्रक्रिया तथा सुन्दर वातावरण पर निर्भर करती है। ज्ञान का उद्देश्य विद्यार्थी का सामान्य वृद्धि करना होता है। अतः ज्ञान के क्षेत्र में सभी बच्चों का सही विकास हो सके, यह उपयुक्त शैक्षिक वातावरण पर निर्भर करते हैं। दैनिक रूप से यह पाया जाता है कि उच्च बुद्धि वाले बच्चे भी सही वातावरण के बगैर उच्च शिक्षाा प्राप्त नहीं कर पाते हैं।

बालक की शिक्षा बुद्धि, मानसिक प्रक्रिया तथा सुन्दर वातावरण पर निर्भर करती है। शिक्षा का उद्देश्य विद्यार्थी का सामान्य वृद्धि करना होता है। अतः शिक्षा के क्षेत्र में सभी बच्चों का सही विकास हो सकें, यह उपयुक्त शैक्षिक वातावरण पर निर्भर करते हैं। दैनिक रूप से यह पाया जाता है कि उच्च बुद्धि वाले बच्चे भी सही वातावरण के बगैर उच्च शिक्षा प्राप्त नही कर पाते हैं।

पश्चिमी मनोवैज्ञानिकों ने यह सिद्ध किया है कि व्यक्तित्व के प्रत्येक पहलू पर भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण का प्रभाव पड़ता है।[5]

2–संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण

1. अग्रवाल एवं स्वर्णकार (2016) में यह शिक्षा एवं एकल विद्याालयों के शैक्षिक वातावरण का छात्रों के आत्मविश्वास पर प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन के प्रमुख उददेश्य–सहशिक्षा एवं एकल विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण की तुलना करना। सहायक शिक्षा स्कूल के ऐजूकेशन परिवेश का छात्रों के आत्मविश्वास का सार्थक प्रभाव पड़ता है एक ही स्कूल के ऐजूकेशन परिवेश का छात्रो के अवलम्ब पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

2.भटनागर, जे0एके० (1972) ने निम्न सास्कृतिक परिवेश से सम्बन्धित छात्रों के महत्वों का अध्ययन किया। न्यायदर्श के रूप में उन्होने भारतीय छात्रों को लिया। अनुसंधान कर्ता ने अपने अध्ययन में सामाजिक मूल्य एवं सौन्दर्यात्मक मूल्यों के प्रति क्रमशः कम झुकाव पाया।

उन्होंने भिन्न रूप में पाया कि ब्रिटेन के छात्रों और अनिवासी भारतीय छात्रों मे सामाजिक मूल्यों क प्रति झुकाव था लेकिन अन्तर पर्याप्त नही था। जबकि भारतीय छात्रों की अपेक्षा के ब्रिटेन के छात्रों ने सामाजिक मूल्य को अधिक महत्व प्रदान किया।

3.कौल० एल० (1974) ने शिक्षकों के सैद्धान्तिक, सामाजिक, राजनैतिक मूल्य, धार्मिक मूल्य और सौन्दर्यात्मक मूल्यो का अध्ययन किया। उन्होंने अपने अध्ययन में उपरोक्त मूल्यों के आधार पर चर्चित और गैर चर्चित अध्यापकों में अन्तर का पता लगाने का प्रयास किया है। उन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि शिक्षकों में आर्थिक व सौन्दर्यात्मक मूल्य कम था जब की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक मूल्य अधिक था।

4.मोस्ले एवं ओके 1970 ने मूल्यों के महत्व के जानने के लिए 381 नातकों पर 5 अध्ययन किये उनके रोजगार मूल्य तथा संतुष्टि एवं असंतुष्टि के स्तर संम्बन्धों की विवेचना की। जिसमे चार अध्ययन के द्वारा परिकल्पना की पुष्टि की गयी और यह सुझाव दिया गया कि इस क्षेत्र मे पहले के अध्ययनों के परस्पर विरोधी प्रतीत होने वाली परिणामों के सन्दर्भ में उचित विवरण मिलता है। यह अध्ययन इस सम्बन्ध में प्रतिवर्ती अध्ययनों की असंगतता की व्याख्या करता है।

5.भारतीय संदर्भ में भटनागर (1963) में विद्यार्थियों के मूल्यों के प्रारूप में अन्तर पाया है। विद्यार्थी समूह में प्रमुख सैद्धान्तिक मूल्य पाये गये तथा कला, विज्ञान ओर वाणिज्य के मूल्यों में अंतर पाया गया।[6]

शोध की आवश्यकता और महत्व :–

विद्यार्थियों का मन बहुत ग्रहणशील होता है अतः वे जैसे परिवेश में रहते है उसका सही प्रभाव उनके दिमाग पर पड़ना अवश्यभावी बालको की साम्थर्य को स्थिर करने की दक्षता के वृद्धि में बालको के दैहिक तथा स्मृति पक्ष के साथ–साथ स्कूल परिवेश का योगदान महत्वपूर्ण है शैक्षिक परिवेश के अन्दर स्कूल के परिवेश शिक्षक उपकरण कक्षा कक्ष फर्नीचर स्वच्छता सौन्दर्यकरण आदि बातो का समावेश होता है, इसका प्रभाव महत्वपूर्ण दृष्ठि से विद्यार्थियों केदिल और दिमाग पर पड़ता है। उपर्युक्त कारणो को दृष्टिगत रखते हुये शोधकर्ता ने इस क्षेत्र अनुसंधान का मानस बनाया है।

समस्या का कथन

''माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में सन्नहित शैक्षिक वातारण के सन्दर्भ में विद्यार्थियों के जीवन मूल्य, अधिगम आदतो तथा उपलब्धि का अध्ययन।

शोध उद्देश्य

इस शोध विषय के उद्येश्य निम्नलिखित है :–

शोध के अध्ययन का उद्देश्य :–

1.सी०बी०एस०ई० एवं यू०पी० बोर्ड के विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण का अध्ययन।

2. सी०बी०एस०ई० एवं यू०पी० बोर्ड के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के जीवन मूल्य का अध्ययन।

3. सी०बी०एस०ई० एवं यू०पी० बोर्ड के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम आदतों का अध्ययन ।

4. सी०बी०एस०ई० एवं यू०पी० बोर्ड के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन ।

5. माध्यमिक स्तर के सी०बी०एस०ई० बोर्ड के विद्यालयी वातावरण एवं विद्यार्थियों के जीवन मूल्य के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

6. माध्यमिक स्तर के यू०पी० बोर्ड के विद्यालयी वातावरण एवं विद्यार्थियों के जीवन मूल्य के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।

7. माध्यमिक स्तर के सी०बी०एस०ई० बोर्ड के विद्यालयी वातावरण एवं विद्यार्थियों के अधिगम आदतों के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन।

8. माध्यमिक स्तर के यू०पी० बोर्ड के विद्यालयी वातावरण एवं विद्यार्थियों के अधिगम आदतों के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन।

9. माध्यमिक स्तर के सी०बी०एस०ई० बोर्ड के विद्यालयी वातावरण एवं विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन ।

10. माध्यमिक स्तर के यू०पी० बोर्ड के विद्यालयी वातावरण एवं विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसम्बन्ध का अध्ययन।

शोध परिकल्पना :–

शोध के अध्ययन की परिकल्पनायें : –

1.सी०बी०एस०ई० एवं यू०पी० बोर्ड के विद्यालयों के शैक्षिक वातावरण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

2. सी०बी०एस०ई० एवं यू०पी० बोर्ड के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के जीवन मूल्य में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3. सी०बी०एस०ई० एवं यू०पी० बोर्ड के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के अधिगम आदतों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

4. सी०बी०एस०ई० एवं यू०पी० बोर्ड के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5. माध्यमिक स्तर के सी०बी०एस०ई० बोर्ड के विद्यालयी वातावरण एव विद्यार्थियों के जीवन मूल्य के सहसम्बन्ध के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

8. माध्यमिक स्तर के यू०पी० बोर्ड के विद्यालयी वातावरण एव विद्यार्थियों के जीवन मूल्य के सहसम्बन्ध के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

7. माध्यमिक स्तर के सी०बी०एस०ई० बोर्ड के विद्यालयी वातावरण एवं विद्यार्थियों के अधिगम आदतों के सहसम्बन्ध के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

8. माध्यमिक स्तर के यू०पी० बोर्ड के विद्यालयी वातावरण एवं विद्यार्थियों के अधिगम आदतों के सहसम्बन्ध के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

9. माध्यमिक स्तर के सी०बी०एस०ई० बोर्ड के विद्यालयी वातावरण एवं विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि के सहसम्बन्ध के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

10. माध्यमिक स्तर के यू०पी० बोर्ड के विद्यालयी वातावरण एवं विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि के सहसम्बन्ध के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तकनीकी शब्द :—

शैक्षिक वातावरण, जीवन मूल्य, अधिगम एवं शैक्षिक उपलब्धि।

शोध अध्ययन की विधि :—

किसी भी शोध कार्य के अन्दर उसके विधि उपकरण तथा प्रक्रिया जितनी अधिक श्रेष्ठ होगी शोध कार्य भी उतना ही श्रेष्ठ होगा क्योंकि कोई भी शोध कार्य उपकरण पर निर्भर करता है। कुछ अनुसंधान निम्न प्रकार हैरू—

1— ऐतिहासिक अनुसंधान ।

2—सर्वेक्षण अनुसंधान ।

3— पद्धति अनुसंधान ।

4— यौगिक अनुसंधान ।

शोध की परिसीमाएँ :—

1— यह शोध उत्तर प्रदेश राज्य तक ही सीमित किया गया है।

2—प्रस्तुत शोध में कुशीनगर जिले सिर्फ माध्यमिक स्तर के बच्चों को लिया जायेगा।

3– प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में यू०पी० बोर्ड के माध्यमिक स्तर के छात्र–छात्राओं को लिया जायेगा।

जनसंख्या न्यायदर्श :–

शोद्यार्थी अपने शोध कार्य में यू०पी० के कुशीनगर जिले के यू०पी० बोर्ड तथा सी०बी०एस०ई० बोर्ड के निजी विद्यालयों का सर्वेक्षण करेगी।

इस प्रकार शोद्यार्थी गोरखपुर के कुशीनगर जिले के 600 विद्यार्थियों का अध्ययन करेगी।

शोध के उपकरण

TOOLS DESCRIPTION

विद्यालय वातावरण के लिये	डॉ. प्रवीण कुमार झा
जीवन मूल्य के लिए	डॉ. एस.एन. उपाध्याय
अधिगम आदत के लिए	डॉ. सी. पी. माथुर

शैक्षिक उपलब्धिडॉ. टी. आर. शर्मा,

के विद्यार्थियों के वार्षिक परीक्षा परिणाम के प्राप्तांगों को सम्मलित किया जायेगा।

शोध चर :–

1– विद्यालय, वातावरण

2– विद्यार्थियों का जीवन मूल्य एवं

3– अधिगम आदत

4–शैक्षिक उपलब्धि

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. चौबे, एस.पी. (2017) भारत में शिक्षा का विकास, इलाहाबाद सेन्ट्रल बुक डिपो।
2. पाठक, पी.डी. (2016) शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा–2, विनोद पुस्तक मन्दिर, नवीनतम संस्करण
3. कपिल, एच.के. (2018) अनुसंधान विधियां, आगरा विनोद पुस्तक मंदिर।
4. मुखर्जी, आर. (2015) सामाजिक अनुसंधान तथा सामाजिक सर्वेक्षण,नई दिल्ली, अग्रवाल पब्लिकेशन अष्टम संस्करण।
5. सिंह, अरूण कुमार (2010) शिक्षा मनोविज्ञान, पटना, भारती भवन,तृतीय संस्करण, पृष्ठ सं0 3–4, 514–515
6. भटनागर, ए0 बी0 (2011) शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, मेरठ, आर0 लाल बुक डिपो, तृतीय संस्करण।
7. गुप्ता, एस.पी., अल्का, उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान शारदा पुस्तक भवन, संस्करण 2010, इलाहाबाद पृष्ठ सं. 282, 363.
8. गुप्ता, एस.पी. सांख्यिकी विधियाँ शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 2015.
9. गुप्ता, एस.पी., शोध विधि, अनुसंधान संदर्शिका, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 2011.
10. भार्गव, एम. मार्डन साइक्लोकजिकल टेस्टिंग एण्ड मैजरमेंट (हिन्दी), आगरा, हरप्रसाद भार्गव. 1978.
11. भटनागर एवं भटनागर शिक्षा अनुसंधान, ईगल बुक्स इन्टरनेशनल, मेरठ. 1997, पृष्ठ संख्या–228.